मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

दृष्टि The Vision

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

# हिन्दी साहित्य
## (Hindi Literature)

टेस्ट–9
(प्रथम प्रश्न–पत्र)

DTVF OPT-23 **HL-2309**

| निर्धारित समय: तीन घंटे<br>*Time Allowed: Three Hours* | अधिकतम अंक : 250<br>*Maximum Marks : 250* |
|---|---|

नाम (Name): Vinod Kumar Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): [redacted]

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 18/08/2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

| 0 | 8 | 0 | 3 | 3 | 3 | 3 |
|---|---|---|---|---|---|---|

## Question Paper Specific Instructions

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 84 टिप्पणी (Remarks): ✓

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
*Evaluator (Code & Signatures)*
E-5114

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
*Reviewer (Code & Signatures)*

दृष्टि The Vision

## Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

कुछ उत्तर अच्छे हैं।
शेष प्रश्नों हेतु अध्ययन अपेक्षित है।
लेखन-शैली ठीक है।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण ठीक है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

## खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) राष्ट्रभाषा और राजभाषा का अंतर

राष्ट्रभाषा का तात्पर्य किसी राष्ट्र के अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा से है। वहीं राजभाषा किसी देश में शासकीय प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा से है।

आमतौर पर किसी देश में राष्ट्रभाषा व राजभाषा एक ही होती है। जैसे- अमेरिका व इंग्लैण्ड में अंग्रेजी भाषा।

वहीं कभी-कभी ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है जहाँ राजभाषा राष्ट्रभाषा से भिन्न दिखाई पड़ती है। जैसे: अंग्रेजी शासन के दौरान भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी थी, परंतु


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

राजभाषा अंग्रेजी थी।

~~वैसे तो~~ राष्ट्रभाषा व राजभाषा में अन्य निम्न अंतर देखे जा सकते हैं:-

| राष्ट्रभाषा | राजभाषा |
|---|---|
| 1- यह किसी राष्ट्र के अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाती है। | 1- इसका प्रयोग शासकीय प्रयोजन हेतु होता है। |
| 2- अन्य भाषाओं के साथ 'संपर्क सूत्र' के रूप में। | 2- इसमें स्थापित मानक होते हैं। |
| 3- कोई स्थापित मानक आवश्यक नहीं है। | 3- इसका काव्य भाषा में उपयोग नहीं। |
| 4- साहित्यिक भाषा के रूप में प्रयोग | 4- इसकी पारिभाषिक शब्दावली लगभग परिभाषित होती है। |
| 5- देशज व तद्भव शब्दों की प्रबलता | 5- सरकारी उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक। |
| 6- बोलियों में भिन्नता | |

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' तथा 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) नाथ साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदिकालीन नाथ साहित्य नाथों द्वारा अपनी सांप्रदायिक मान्यताओं के प्रसार हेतु लिखा गया था। इसमें 'संधा भाषा' का प्रयोग किया गया, जिसमें खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप दिखाई देता है।

नाथों द्वारा साधना पद्धति के क्रम में रहस्यवाद की प्रस्तुति में खड़ी बोली की प्रस्तुति देखने को मिलती है। जैसे कि-

"नाथ बोलै अमृत वाणी,
बरिसैगी कंबली भीजैगा पाणी।"

नाथों में सर्वप्रमुख 'गोरखनाथ' द्वारा रचित साहित्य में भी खड़ी बोली का शुरुआती रूप



Copyright – Drishti The Vision Foundation

नज़र आता है। साधनात्मक रहस्यवाद से संबंधित साहित्य में इसका अंश देखने को मिलता है।

नाथों की मिश्रित भाषा में अनेक बोलियों का मिश्रण देखने को मिलता है। इनमें एक खड़ी बोली भी थी। प्रतीकों की भाषा के रूप में इसका प्रादुर्भाव देखने को मिलता है।

कुल मिलाकर 19 वीं शताब्दी में विकसित खड़ी बोली के आरंभिक स्वरूप नाथ साहित्य की संधा भाषा में देखने को मिलता है।

5/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) बघेली बोली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'कुमाऊँनी' बोली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अपभ्रंश की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अपभ्रंश के अध्ययन के प्रमुख स्रोतों का उल्लेख करते हुए अपभ्रंश के प्रमुख भेदों पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौरान आन्ध्रप्रदेश राज्य में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की विशेषण-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भोजपुरी' बोली का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) भाषा के धरातल पर हिन्दी को अपभ्रंश का अवदान बताइए। 20

हिंदी का विकास संस्कृत भाषा के सरलीकरण के रूप में हुआ है जिसमें अपभ्रंश ने मध्य कड़ी के रूप में कार्य किया है।

अपभ्रंश के योगदान को निम्न आधारों पर देखा जा सकता है-

1- कारक व्यवस्था के क्रम में अपभ्रंश में विभक्तियों के स्थान पर परसर्गों के प्रयोग की शुरुआत हुई। संबंध कारक के रूप में 'का' का प्रयोग इसी की देन है।

2- प्रातिपादिक शब्दों के प्रयोग को बढ़ावा।

3- लिंग के स्तर पर अपुंसक लिंग का प्रयोग खत्म हो गया और संस्कृत के 3 लिंगों की जगह


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

२ ही लिंगों की व्यवस्था जो कि हिंदी में भी विद्यमान।

4- द्विवचन का लोप शुरू और इसका बहुवचन में समावेश।

5- शब्द संरचना के स्तर पर तद्भव व देशज शब्दों की स्वीकृति, जिसका प्रभाव हिंदी में भी दिखाई देता है।

6- 'ट वर्ग' का विकास इसी ~~कुछ~~ की देन है। (ड़, ढ़)

7- अपभ्रंश की शब्दावली का प्रयोग हिंदी की विभिन्न बोलियों में भी दिखाई देता है।

इस तरह हिंदी के विकास में अपभ्रंश ने एक महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसमें सरलीकरण को बढ़ावा मिला।

10.5/20

थोड़ा और विस्तार अपेक्षित

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिंदी की वाक्य-संरचना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानक हिंदी में 'वाक्य-संरचना' व्याकरण का एक महत्वपूर्ण पक्ष है जिसमें सार्थक शब्द या पदों को एक व्यवस्थित क्रम में लिखा जाता है, ताकि वाक्य सार्थक हो सके।

हिंदी की वाक्य संरचना में कारक व्यवस्था एक निश्चित क्रम में आती है जैसे-

सम्बोधन → कर्ता → अधिकरण → ~~अन्य~~ संबंध → अपादान → संप्रदान → करण → कर्म

वाक्य को हिंदी में २ भागों में बाँटा जाता है।

(i) सरल वाक्य (ii) जटिल वाक्य

सरल वाक्य वैसे वाक्य होते हैं, जिनमें एक ही


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विधेय या उद्देश्य होता है।
जैसे - राम जाता है।

वहीं जटिल वाक्य को २ भागों में बाँटा जाता है, जिसे संयुक्त और मिश्र वाक्य कहते होते हैं।

संयुक्त वाक्य में दो या अधिक वाक्यों को एक साथ लिखा जाता है; वहीं मिश्र वाक्य में दो या अधिक उपवाक्य होते हैं, जिसमें एक उपवाक्य दूसरे उपवाक्य पर निर्भर करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## खण्ड - ख

**5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये:** $10 \times 5 = 50$

(क) शृंगारिकता के धरातल पर रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त कविता का अंतर

रीतिकालीन साहित्य में 'शृंगार' की केंद्रीय प्रधानता है। दरबारी जीवन से संबंधित होने के बावजूद रीतिबद्ध व रीतिमुक्त कविताओं में शृंगार के स्तर पर भिन्नता दिखाई देती है।

रीतिबद्ध कविताओं में शृंगार का बहुनिष्ठ व देहमूलक चरित्र नज़र आता है और साथ ही भोगवादी मानसिकता की प्रस्तुति देखने को मिलती है। बिहारी इसके प्रतिनिधि कवि मानते जाते हैं। इनके लिए शृंगार मनोरंजन का एक माध्यम है, जहाँ भावनाओं की प्रस्तुति देखने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को नहीं मिलती है।

वहीं रीतिमुक्त कविता दरबारी होने के बाद भी श्रृंगार में भावनाओं के साथ एकनिष्ठता व प्रेम की अनुभूति देखने को मिलती है। घनानंद ने अपनी प्रेमिका 'सुजान' को लेकर प्रेम की एकनिष्ठता, सहजता व सरलता को उभारा है। उनके अनुसार प्रेम एक सीधा है।

इस तरह दोनों कवियों में श्रृंगार को लेकर दृष्टिकोण के स्तर पर भिन्नता दिखाई पड़ती है, लेकिन दोनों श्रृंगारपूर्ण कविताओं की रचनाएँ दरबारी माहौल को ध्यान में रखकर ही रची गई हैं।

ठीक है
5½


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हालावाद


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कविवचन सुधा' पत्रिका

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हिन्दी कहानी के विकास में चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कहानी 'उसने कहा था' को हिंदी की प्रथम कहानी माना जाता है। इस आधार पर हिंदी कहानी को नींव प्रदान करने में 'गुलेरी' जी का महत्वपूर्ण योगदान देखा जा सकता है।

गुलेरी द्वारा रची कहानियों में यथार्थवाद की प्रस्तुति देखने को मिलती है। इसके पहले की कहानियाँ उपदेशपरक या चमत्कारपरक रूप में रची गयी थी। गुलेरी ने अपनी कहानियों की विषयवस्तु अपने समाज के यथार्थ स्वरूप के रूप में देखने को मिलती है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हालांकि उनकी कहानियों में हृदय परिवर्तन व आदर्शवाद की बू देखने को मिलती है।

उनके चरित्र भी समाज के वर्गों से ही लिए गए हैं, उन्होंने नारी समस्या, बेमेल विवाह, आर्थिक शोषण, संयुक्त परिवार आदि विषयों पर कहानी की रचना की है।

हिंदी कहानी उनके 'उसने कहा था' नामक प्रथम कहानी के योगदान के लिए 'गुलेरी' का नाम अप्रतिम है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) सिद्ध साहित्य की प्रवृत्तियाँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) प्रेमचन्द की कहानियों के रचना-शिल्प पर प्रकाश डालिये। 20

प्रेमचंद जी को हिंदी साहित्य का शिखर पुरुष माना जाता है। उन्होंने हिंदी कहानी की प्रारंभिक अवस्था को 15 वर्षों के भीतर एक ही झटके में परिपक्व अवस्था में पहुँचा दिया।

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में यथार्थ की प्रस्तुति की है। उनके पहले की कहानियों में उपदेशात्मक व ~~किस्सा~~ जादुई भाव की अभिव्यक्ति देखने को मिलती थी।

प्रेमचंद ने अपने समाज में व्याप्त समस्याओं को पूरी यथार्थता के साथ अभिव्यक्त किया। उन्होंने शुरुआत में 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' की रचनाएँ रची क्योंकि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उन पर गांधी जी के 'हृदय परिवर्तन' का प्रभाव दिखाई देता है जैसे कि- बूढ़ी काकी, अलग्योझा आदि।

लेकिन उनके अंतिम दौर में उन्होंने आदर्शवाद की केंचुल उतार फेंकी और 'चरम यथार्थ' को अपनी कहानियों में उतारा। सद्गति, पूस की रात आदि उल्लेखनीय है। उनका चरम यथार्थ रूप 'कफ़न' कहानी में देखने को मिलता है, जो दलित समस्या पर केंद्रित कहानी है।

भाषा के स्तर पर भी उन्होंने आम-जनमानस की आम हिंदुस्तानी भाषा का प्रयोग किया और साहित्य को जनसुलभ


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बनाया।

उनकी कहानियों में कथानक एक निश्चित स्वरूप लिए हुए आदि, मध्य व अंत में बँटा हुआ है; लेकिन अलग्योझा जैसी कहानियों में कथानक टूट जाता है।

उनकी विषयवस्तु विश्वसनीय है क्योंकि वे सामाजिक वर्गों की समस्याएँ उठाते हैं जैसे- दलित वर्ग, नारी वर्ग, किसान वर्ग, वृद्ध समस्या, बाल मनोविज्ञान आदि।

उनके चरित्र सामाजिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं प्रेमचंद ने चरित्रों को स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में निरूपण किया। उनके मनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण किया


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है; उनमें अंतर्द्वंद्व जैसे गुण भी देखने को मिलते हैं।

संवाद योजना के स्तर पर भी प्रेमचंद ने छोटे, चुस्त व गतिशील संवादों का प्रयोग किया है।

इस तरह प्रेमचंद ने संवेदना व शिल्प दोनों ही स्तरों पर कहानी में व्यापक परिवर्तन किए हैं। इसी आधार पर कहा जाता है कि "प्रेमचंद ने हिंदी कहानियों की कर्मभूमि ही नहीं बदली, बल्कि उनका कायाकल्प भी कर दिया।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी के समकालीन यात्रा-वृत्तांत पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी कहानी के विकास में कृष्णा सोबती के महत्त्व को रेखांकित कीजिए। 15

मित्रो मरजानी
बादलों के घेरे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृष्णा सोबती नए लेखन दौर की कहानीकार है। इन्होंने अपनी ~~कहानी~~ कहानियों में साफ़गोई (बोल्डनेस) व भाषायी विविधता का प्रयोग किया है।

कृष्णा सोबती की अधिकांश कहानियाँ पंजाबी मिश्रित हिंदी में है। उन्होंने सहज यौन अभिव्यक्ति की प्रस्तुति की है। उनके अनुसार यौन चेतना नैतिकता से जुड़ा हुआ मामला न होकर मानवीय सहज भाव है।

इन पर फ्रॉयड के 'मनोविश्लेषणवाद' का प्रभाव दिखाई देता है, जिन्होंने 'लिबिडो' (काम-चेतना) को सर्वप्रमुख बताया है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इनकी कहानियों में घटनाएँ व वर्णन कम है और व्यक्ति के अंतर्मन के विचारों की अभिव्यक्ति अधिक है। अत इन्होंने चेतना प्रवाह शैली के माध्यम से अंतर्मन की तहों को कहानियों में उकेरा है।

इनकी कहानियों की एक मूल विशेषता भाषाई विविधता की है। उन्होंने तत्समप्रधान हिंदी से लेकर पंजाबी-फ़ारसी मिश्रित हिंदी तक कहानियों की रचना की है।

इनकी कहानियों में नई कहानी की लगभग सभी विशेषताएँ विद्यमान है। इनकी अधिकांश कहानियाँ शहरी मध्यवर्ग में व्याप्त अकेलेपन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अजनबीपन, निरर्थकता बोध आदि को समेटे हुए है। इस वजह से संबंधों का टूटन इनकी कहानियों का केंद्रीय तत्व है।

शिल्प के स्तर पर इन्होंने प्रतीकों व बिंबों की सुंदर अभिव्यक्ति की है ताकि नई कहानियों की जटिलता को उभारा जा सके।

कुछ आलोचकों ने इनकी कहानियों को लेकर अश्लीलता के आरोप लगाए हैं, लेकिन वास्तव में उन्होंने यथार्थ की सहज अभिव्यक्ति की है। इन कारणों से हिंदी कहानियों में कृष्णा सोबती का बहुमूल्य योगदान है।

8½

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'छायावाद पलायन का काव्य है।' इस मत पर विचार कीजिये। 20

'छायावाद' को 1918 से लेकर 1936 ईस्वी तक की काव्यधारा के रूप में जाना जाता है। इसे स्वच्छंदतावाद का ही विकसित रूप माना जाता है। जिसके तहत स्वातंत्र्य चेतना की मुखर अभिव्यक्ति हुई है। पंत, निराला, प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि प्रमुख छायावादी कवि है।

छायावाद पर कुछ आलोचकों द्वारा पलायनवादी होने का आरोप लगाया जाता है। उनके अनुसार प्रकृति की गोद में जाने के क्रम में वे पलायनवादी मानसिकता की भी प्रस्तुति करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यह आरोप कुछ हद तक सही भी प्रतीत होते हैं क्योंकि इस दौर के रचनाकार अपनी व्यक्तिकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति करना चाहते हैं और इस क्रम में समाज से टकराहट देखने को मिलती है। 'महादेवी वर्मा' अनुसार "आज का हर रचनाकार अपनी हर साँस का इतिहास कह देना चाहता है।"

इसी क्रम में समाज के टकराहट के भय से वे प्रकृति की शरण में जाना चाहते हैं और क्योंकि वे सामाजिक दबाव के कारण खुलकर अभिव्यक्ति नहीं कर पाते हैं। इसी क्रम में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रसाद जी कहते हैं कि-

"ले चल मुझे भुलावा देकर
मेरे नाविक धीरे-धीरे।"

इस तरह छायावादी काव्य में पलायनवादी मानसिकता दिखाई पड़ती है। लेकिन पूरे छायावाद को पलायन का काव्य कहना एक अतिशयोक्ति होगी क्योंकि पलायनवादि मानसिकता छायावाद के कुछ ही अंशों में दिखाई देती है, वो भी प्रतीकात्मक रूप में।

दरअसल छायावादी कवि 'स्वातंत्र्य चेतना' से युक्त हैं और व्यक्ति के स्वतंत्रता की कामना करते हैं। लेकिन उनकी स्वतंत्रता समाज के विरुद्ध न होकर समाज के साथ ही है। क्योंकि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

वे "समाज से' स्वतंत्र नहीं, बल्कि समाज में' स्वतंत्र होना चाहते हैं।"

और इसी क्रम में वे 'प्रकृति' को अपने काव्य का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाते हैं क्योंकि स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति प्रकृति की गोद में ही जाकर पूरी हो सकती है।

छायावाद पाश्चिमी के स्वच्छंदतावाद (Romanticism) से प्रभावित काव्य है और वहाँ पर भी ये आरोप देखने को मिलते हैं।

अत: छायावाद पलायन का काव्य न होकर उसके केवल एक अंश में ही पलायन की उपस्थिति है; बल्कि यह तो सामाजिक - सांस्कृतिक चेतना से युक्त काव्य है।

ठीक है

11/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी निबंध के विकास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

जिस तरह कहानी व उपन्यास में प्रेमचंद जी का केंद्रीय महत्व है उसी तरह 'शुक्ल जी' का केंद्रीय महत्व है। शुक्ल जी के अनुसार गद्य की कसौटी निबंध ही है। इन्होंने कई विचारपरक निबंध लिखे हैं, जिनमें 'कविता क्या है' और 'श्रद्धा - भक्ति' प्रमुख हैं।

शुक्ल जी के पहले भी निबंध लिखें जा रहे थे। बाल- कृष्ण भट्ट व प्रतापनारायण मिश्र आदि के द्वारा कई ललितपरक निबंध लिखें, लेकिन शुक्ल जी ने निबंधों में नया आयाम देकर उसे 'विचारपरक प्रधान' बना दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उनके निबंधों में मनोवैज्ञानिक परिभाषाओं का प्रयोग करके विभिन्न भावों को परिभाषित किया है जैसे- 'श्रद्धा-भक्ति' निबंध में उन्होंने श्रद्धा, प्रेम, भक्ति, कृतज्ञता, लोभ आदि की विस्तृत विवेचना की है।

वहीं उन्होंने व्यक्तिव्यंजकता, कल्पना, सहृदयता का भी प्रयोग किया है। इसे हास्य-व्यंग्य, बोध आदि के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

उन्होंने 'कविता क्या है' निबंध के माध्यम से कविता की नई कसौटियाँ स्थापित की है और रस की लोकमंगल व्याख्या प्रस्तुत की है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शुक्ल जी के निबंधों में विषय-वैविध्य के साथ-साथ शुक्ल जी के पांडित्य, वैज्ञानिकता, विश्लेषण आदि की प्रस्तुति दिखाई देती है। इनके निबंधों को आज भी बहुत प्रशंसा देखने को मिलती है।

डॉ. रामविलास शर्मा ने शुक्ल जी के बारे में कहा है कि- "हिंदी निबंधों में शुक्ल जी का वही स्थान है, जो उपन्यास में प्रेमचंद व कवि निराला का।"

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हिंदी निबंध के विकास में शुक्ल जी का योगदान अप्रतिम व अतिरेकनीय है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) स्त्री-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी उपन्यास का अनुशीलन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी उपन्यास में स्त्री-विमर्श एक विशिष्ट धारा है इसमें उपन्यासों की रचनाएँ स्वयं स्त्रियों द्वारा ही की गई क्योंकि स्त्री-विमर्श इस पर आधारित है कि "संवेदना ~~कि~~ जितनी भी सशक्त हो, वह स्वयं वेदना के स्तर को नहीं छू सकती है।"

इसी क्रम में अनेक स्त्री उपन्यासकारों ने उपन्यासों की रचना की है जिनमें कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा आदि प्रमुख हैं।

इनका मानना है कि 'भोगा हुआ यथार्थ' से ही साहित्य की व्यापक प्रस्तुति हो सकती है क्योंकि पुरुष उपन्यासकारों द्वारा


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'सोचा हुआ यथार्थ' में यथार्थ की प्रभावी अभिव्यक्ति नहीं हो सकती है।

इन उपन्यासों में नारी-पुरुष संबंधों की केंद्रीय भूमिका है स्त्री पुरुष संबंधों में सहज काम-चेतना को उभारा गया है कृष्णा सोबती को बोल्ड लेखिका का दर्जा मिला हुआ है, उन्होंने यौन-क्रिया के प्रसंगों समेत गालियों का भी प्रयोग अपने साहित्य में किया है।

मन्नू भंडारी इनसे थोड़ी अलग पृष्ठभूमि के उपन्यास लिखें हैं, 'महाभोज' उनका प्रसिद्ध उपन्यास है, जिसमें उन्होंने लोकतंत्र व राजनीति के विकृत स्वरूप को प्रदर्शित किया है उनके अन्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उपन्यासों में 'अपना बंटी' भी महत्वपूर्ण है।

स्त्री-विमर्श ने स्त्रियों की समस्याओं को उठाने के साथ-साथ अन्य विषयों पर भी उपन्यासों की रचना की है।

इनमें दलित विमर्श के तहत भी अनेक स्त्री-विमर्श उपन्यासों की रचनाएँ दलित महिलाओं द्वारा की है, जिसमें दलित महिलाओं के दोहरे शोषण को उभारा है।

इस तरह उपन्यासों में स्त्री-विमर्श ने नया आयाम प्रदान किया और 'भोगे हुए यथार्थ' के प्रमाणिकता की प्रस्तुति की।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) प्रगतिवादी कविता की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'चौथा सप्तक' का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रसवादी आलोचक होते हुए भी आचार्य रामचंद्र शुक्ल आधुनिक आलोचक हैं। कैसे? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)




Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)





Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

## रफ कार्य के लिये स्थान

## (Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

## रफ कार्य के लिये स्थान

## (Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation